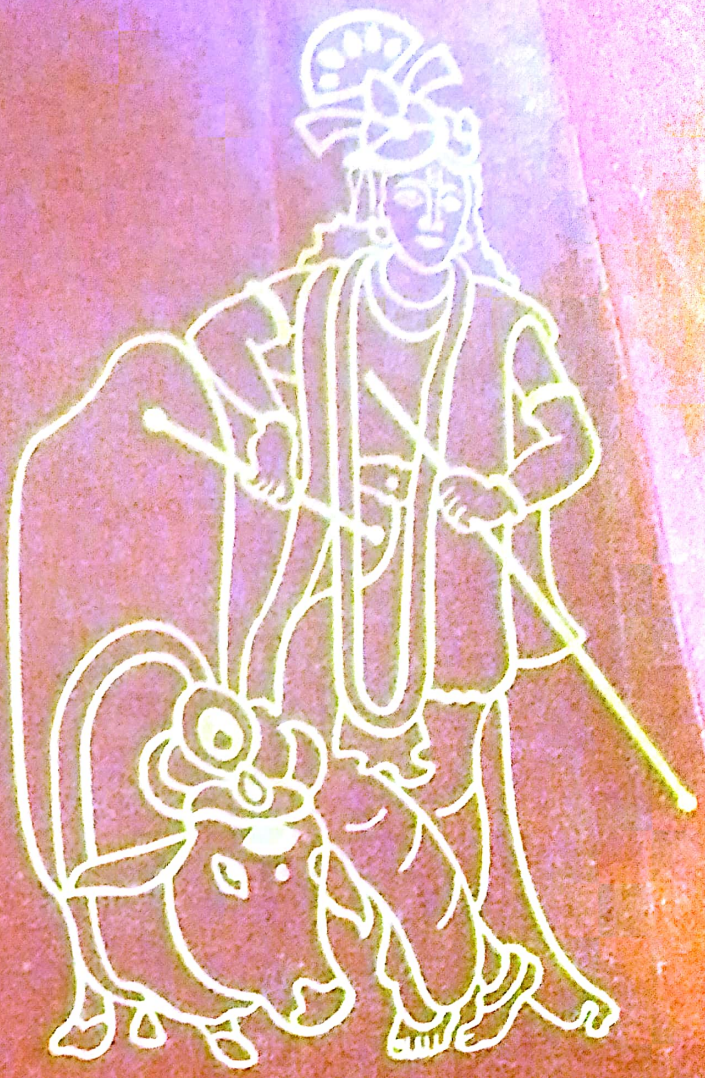

सखा सुदामा चरित्र

(छन्दावली)

रमेश्वर प्रसाद गुप्ता 'इन्दु'

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक — **प्रवीण प्रकाशन मन्दिर**
बड़ागाँव, झाँसी उ.प्र.

लेखक — रामेश्वर प्रसाद गुप्ता 'इन्दु'
सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण — २००२

मूल्य — ३०/.

आवरण एवं कम्पोजिंग : **पवन कम्प्यूटर्स,**
हींगन कटरा,झाँसी (उ०प्र०)

मुद्रक : **पल्लवी ऑफसेट**
१५२/८, बड़ा मठ गुसांईपुरा
मानिक चौक, झाँसी

SAKHA SUDAMA CHARITRA

By Rameshwar Prasad Gupta, `Indu'

Price : 30/-

Scanned with OKEN Scanner

पवित्र प्रेम और सहज समर्पण का आदर्श

भक्ति साहित्य में कुछ ऐसे विशिष्ट प्रसंग है जो स्वतः ही रसमय और भावोत्पादक है। उनके कथन और श्रवण से रस का अनंत स्त्रोत हृदय में उमड़ने लगता है। इन्हीं विशिष्ट चरित्रों में श्रीमद्भागवत में सखा सुदामा का चरित्र है। प्रायः भागवत्कथा वाचक इस पावन कथा का समापन श्री सुदामा चरित्र से कर श्रोताओं को रस से सरावोर कर देते है। ऐसे पावन चरित्रों पर प्रत्येक भावुक कवि अपनी लेखनी चलाये बिना रह नही पाता। श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्ता 'इन्दु' ने उनके चरित्र को छन्द बद्ध कर स्वयं करूण रस में सरावोर होकर जनजन को इस पावन गंगा में नहाने के लिये भागीरथ की भूमिका सम्पन्न की है। यों तो उनके द्वारा रचित अनेक गीत गजल कुण्डलियों में उनकी काव्य प्रतिभा में उनकी लेखनी का जादू जन सामान्य को कुछ अधिक ही सम्मोहित करने में समर्थ हुआ है।

"सुदामा चरित्र" बचपन के दो सखाओं के बीच स्थायी **पवित्र प्रेम और सहज समर्पण का आदर्श** है जिसमें गरीबी–अमीरी, छोटा–बड़ा, श्रेष्ठ कनिष्ठ, राजा रंक के भेद तिरोहित हो जाते है। इस सुन्दर कथानक की श्री 'इन्दु' ने ५१ छन्दों में पद्यवद्ध किया है। प्रथम ५ छन्द तो मंगलाचरण के हैं– इसके अतिरिक्त शेष छंदों तक सुदामा की गरीबी तथा अपने अभिन्न सखा श्री कृष्ण के बचपन के मधुर संस्मरण और भाव विमोरता का सुन्दर सहज वर्णन है। उनकी दरिद्रता का सहज स्वाभाविक वर्णन में छन्दरचना देखिये–

Scanned with OKEN Scanner

प्रिय सखा द्वारिकेश, सरल सुदामा दीन,
टूटे फूटे चार पात्र, झोपड़ी सजाये हैं।
लज्जा ढकने को कछु, मैले चिथरे से वस्त्र,
धनहीन ब्रह्मपुत्र गृहस्थी बसाये हैं।।
मांगत न काहू कछु, बिन मांगे मिल जांये
अरपन करे ईश, जीवन निवाये हैं।
'इन्दु' कर उपवास, रहें न कभी उदास
झांकी श्याम सुन्दर की, मानस बिठाये हैं।

उन श्याम सुन्दर, द्वारकाधीश श्री कृष्ण के प्रति सुदामा का अभिन्न प्रेम है। आर्थिक दृष्टि से तो आकाश–पाताल का अंतर है। परन्तु प्रेम की पृष्ठभूमि पर दोनों अभिन्न है। सुदामा की पत्नी सुशीला आग्रह करती है कि उनके पास जाओ, वे राजा है, चुटकी भर भी छोली में डाल देंगे तो जीवन भर की दरिद्रता समाप्त हो जायेगी। लेकिन सखा से कुछ मांगना अपने प्रेम को छोटा करना है और स्वाभिमान की हत्या करना है। प्रेम तो देना ही जानता है लेना उसमें नहीं है। यही विचार कर सुदामा द्वारा ब्राह्मण की मर्यादा और वृत्ति का दिग्दर्शन कराते हुये अपनी पत्नी को समझाते है कवि की अभिव्यक्ति और शब्द योजना देखिये–

ब्रह्मकुल मेरौ धाम, धन से मुझे क्या काम,
पगली! कहै जो तू, भिक्षा माँग लाऊँ मैं।
सुन सुशीला सरल, धन हेतु है संकोच
मन मोहन के द्वार, द्वारका न जाऊँ मैं।।
मत जाओ कुछ मांगने लेकिन अपने सखा से मिलने
हेतु जाने में तो कोई अनौचित्य नहीं हैं– सुशीला

Scanned with OKEN Scanner

का यह चतुराई पूर्ण आग्रह मन को छू जाता है।

दिन दिन दूनौ देख, दारिद दुकाल दुख,
जाओ प्रिय प्राणनाथ, मात्र मिल आइये।
परम कृपाल कृष्ण, दरसन सुखनंद
देत दीनन आनन्द कुछ लाभ पाइये।

लेकिन शिष्टाचार का भी पूरा पूरा ध्यान रखा गया है मित्र के पास जाना तो खाली हाथ क्या जाना। दरिद्रता है तो क्या शिष्टाचार तो नही छोड़ा जायेगा–इसीलिये सुशीला स्वयं ही कहती है–

मित्र पास खाली हाथ, संकोच तजौ ओ नाथ,
पड़ोस से मांगे कछु, तंदुल ले जाइये।
रूखे से चाउँर मांग, पोटली में दिये बांध
बोली इन्दु कर जोड़, भेंट लिये जाइये।।

श्री इंदु ने दरिद्रता में भी सखा के प्रति शिष्टाचार का पूरा पूरा निर्वाह किया है। वे किसी प्रकार मांगते खाते कई दिनों भी यात्रा के बाद द्वारका पहुँच जाते है। द्वारपाल से कहते हैं कि अपने स्वामी से कहो कि उनके मित्र सुदामा मिलने आये हैं सुदामा की हुलिया देखकर कौन विश्वास करेगा कि एक भिखारी राजा का मित्र हो सकता है अतः द्वारपाल द्वारा सुदामा का मजाक उड़ाना स्वाभाविक घटना है। इसका चित्रण श्री इन्दु ने सुन्दर ढंग से किया है–

कहै लगे द्वारपाल, सुनो ओ सुदामा दीन,
जगत में कीर्तमान, सखा कैसे हो गये?
चौदह भुवन तीन, लोक रचे जग सार,
द्वारका नरेश कृष्ण मीत कैसे हो गये?

रामेश्वर प्रसाद गुप्ता 'इंदु'
की
लोकप्रिय व अनुपम कृतियाँ

- मौकिफ-ए-दिल
  (ग़ज़ल संग्रह) मूल्य २५/-
- इन्दु की कुण्डलियाँ
  (कुण्डली संग्रह) मूल्य २०/-
- प्रेम - पुष्प
  (दोहा संग्रह) मूल्य ५/-
- साहित्य सारथी
  (काव्य संग्रह) सम्पादित मूल्य ३५/-
- सती सावित्री महिमा
  (दोहावली) मूल्य १०/-
- अल्फाज़ - ए- आईना
  (ग़ज़ल संग्रह) सम्पादित मूल्य २५/-
- राष्ट्र स्वरांश
  (देश प्रेम के चुनिन्दा राष्ट्रीय गीत) मूल्य ८/-
- सखा सुदामा चरित्र
  (छन्दावली) मूल्य ३०/-
- शब्द-सुधा
  (काव्य संकलन), सम्पादित मूल्य ५०/-

पुस्तक मँगाने के लिए लिखें :

इंदु साहित्य सदन

बड़ागाँव, झाँसी - २८४१२१

मधु कृषि बीज भण्डार व पुस्तक विक्रेता

रेलवे स्टेशन खुरहण्ड, बाँदा (उ.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner